डॉ॰ सुधीर कुमार सुमन
(मैथिली विभाग)
पूर्णियाँ कॉलेज, पूर्णियाँ

स्नातक प्रतिष्ठा (मैथिली)

प्रथम खण्ड - 2019-20

द्वितीय पत्र

संकलन - प्रकाशक मैथिली अकादमी, पटना
निबंध शीर्षक - रिक्तता ओ पूर्णता
निबंधकार - श्री वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'

प्रस्तुत निबन्ध मे निबन्धकार एक कथाक माध्यमसँ एक पैघ नीतिगत तथ्यकेँ सुस्पष्ट करबाक प्रयास करैत कहैत छथि जे कोनो पुण्यात्मा कहियो गामसँ दूर बाट कातमे एक छोट-छीन पोखरि खुनबओने छल। एहि पोखरिक जल पीबिक बाट-बटोही अपूर्व तृप्ति प्राप्त करैत छल। किछु नहि तऽ एक पियासल बटोहीकेँ केवल ... जल तृप्त कऽ दैत छल।

मुदा एक बेर एहि पोखरिक जलदेवताकेँ अपन छोट-छीन आकार पर बड़ ग्लानि होमए लागल। हँ, बाट-बटोही सेहो ई बात मोनमे अबैत छल जे ई जलाशय जँ कनेक पैघ रहैत तऽ कामसँ काम एहिमे पानिओ बेसी रहैत।

अतएव ग्लानिसँ डूबल करैत जलदेवता आकाशक कारी-कारी मेघकेँ ई निवेदन कएलनि जे एहि पोखरिकेँ खूब बेसी भरि दिऔक, जैसे जे सूर्य सोखैत-सोखैत थाकि जाथि। वर्षा भेलैक, पोखरि कनोकनाक भरि गेल। आब पोखरिक जल-देवताकेँ अपन पूर्णतापर घमंड छलनि।

शरद् गेल, शिशिर आयल, तकर पश्चात् हेमन्त वसन्तक आगमन सेहो भऽ गेल। मुदा बटोही तँ एको गोट नहि आयल! पशुओ जे, कोनो नहि आयल। पोखरि ओहिना उमड़ल छल। ओकर पानि पिरा गेलैक, ओहि पोखरिक पानिमे छोट-छोट कीड़ा भऽ गेल छलैक। लगपासक लोकसभकेँ ई सन्देह होमए लागल छलैक जे एहि तालपोखरिमे की भेलैक जे गन्हा गेल छैक। अवश्ये एहिमे कोनो ने कोनो अपवित्र वस्तु पड़ि गेल छैक। लोक ओम्हरका बाटो चलनाइ छोड़लक। चिड़ै-चुनमुन किछु नहि पोखरिक दिस उड़ब छोड़ि देलक। ई अपन

जलाशयक ई गजब लनि देखि जलदेवता खिसिआ कऽ जलाशय व्यक्ति केँ ताक निश्चय करलनि। मुदा ताहि क्षण हुनका एक उपाय सुझलनि।

सामान्यक व्याख्यान भेल ग्रीष्म ऋतुक आगमन मे एकदिन सूर्योदय काल जलदेवता मुह मुँह भऽ कऽ भगवान सूर्यदेव सँ ई निहोरा करलनि जे हे सूर्यदेव एहि जलाशय के स्वच्छ आ सुपेय बनाबक सामर्थ्य अहीं मे अछि। एकर जलकेँ स्वच्छ आ सुपेय बनादियौ। तावत आकाशवाणी भेल जे हे साधो अहाँ स्पष्ट करू जे अहाँ केँ की चाही- 'स्वच्छता' वा 'पूर्णता' दुहु मे की? जलदेवता अपनाभिलाष कि कऽ बजलाह जे हुनका स्वच्छता चाही।

फलस्वरूप धार्मिक प्रभावें जो जोरसँ चलए लगल आदिसँ जो किछ करनिछ तिनमे रिक्त भऽ गेल। किन्तु आब जल देवताक एहि मित्रता केँ जनानि नहि बात सन्तोष छलनि जे तृप्त लोकक निःश्वास भेटत छलनि छल।

अतएव एहि निबन्धक माध्यमसँ निबन्धकार एकटा पैघ यथार्थ बात कहने छथि। ई निबन्ध 'विदेह' पत्रिका मे जनवरी 1958 मे छपल छल।